CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2673

1.3
VHP

जिनधर्मसंग्रहः

प्रकाशकः—
सेठ प्रेमचंद सखाराम लेंगरेकर.
निरा—बारामती, [पुणें.]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या..... प्राप्ति-संख्या.....

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम श्री दशभक्त्यादि संग्रह.....

लेखक पं० फूलचन्द्र शास्त्री.....

लेनेवाले का	देनेकी	लेनेवालेका	लौटानेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्रीवीतरागाय नमः

2603

ॐ

श्री दशभक्त्यादिसंग्रहः।

— संशोधक व संपादक —

श्रीमान् पं० फूलचंद शास्त्री.

—: प्रकाशक :—

श्री. सेठ प्रेमचंद सखाराम. लेंगरेकर
निरा-बारामती, (पुणें,)

वैशाख शुद्ध ३
वीर सं.२४६२

मूल्य १ रुपया
साजिल्द १। रुपया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकः—
सेठ प्रेमचंद सखाराम लेंगरेकर
निरा—बारामती, [पुणें.]

मुद्रकः—
श्री महावीर प्रिंटिंग प्रेस,
नातेपुतें, [सोलापूर]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री. सेठ सखाराम भवानचंद लेंगरे फर.

आपकी शुभ स्मृतिके लिये ही यह ग्रंथ प्रकाशित किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो शब्द ।

नित्यपाठसंग्रह या जिनवाणीसंग्रह के नामसे बहुतसे ग्रंथ आज जैन समाजमें प्रचलित हैं, उनके रहते हुये इसके प्रकाशन का क्या कारण था ऐसा प्रश्न होना स्वाभाविक है । उत्तरमें इतना ही निवेदन है कि यह नित्यपाठसंग्रह दूसरे ग्रंथोंकी अपेक्षा दूसरे रूपमें ही आज जैन समाजके समक्ष रक्खा जा रहा है । यह ग्रंथ खासकर त्यागीवर्ग व साधुवर्ग को उद्देश्यमें रखकर ही प्रकाशित किया गया है । इसमें ३१ विषयोंका संग्रह है जैसा कि विषयसूचीसे विदित होता है । इन ३१ विषयोंमें से स्तुति स्तोत्र भक्ति मार्गके पोषक हैं और तत्वार्थसूत्र जैसे विषय ज्ञानमार्गकी अभिवृद्धि करने वाले हैं तथा ईर्यापथ आदि भक्ति चारित्रको परमार्जित करते हैं इसके ग्रंथ संग्राह्य विषय भक्तिमार्ग,ज्ञानमार्ग और चारित्र मार्गकी पुष्टि करनेवाले होनेसे उनका स्वाध्याय करनेवाला और तदनुसार अपनी वृत्ति रखनेवाला श्रावक अथवा साधु रत्नत्रयकी विशुद्धिको प्राप्त करके मुक्तिलाभ कर सकता है । अतएव इस ग्रथके पठन करनेसे मोक्षमार्गकी विशुद्धि होकर यह मोक्षके लिये परंपरा कारणरूप है । ऐसा समझकर ही हमने अपने स्वर्गीय पूज्य पिता सखाराम भवानचंद लेंगरेकर इन की स्मृतिके लिये तथा ज्ञानावरणीय कर्मके क्षय के लिये व स्वपर कल्याण के लिये इस ग्रंथको प्रकाशित किया है- अपका नम्र - प्रेमचंद सखाराम लेंगरेकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषयानुक्रमणिका ।

क्रम नंबर	विषय	पृष्ठसंख्या
१	श्री सहस्रनामस्तोत्रम्	१....३२
२	भक्तामरस्तोत्रम्	३२....४३
३	कल्याणमंदिरस्तोत्रम्	४४... ५४
४	एकीभावस्तोत्रम्	५५....६२
५	विषापहारस्तोत्रम्	६३... ७१
६	जिनचतुर्विंशतिका	७२....७९
७	तत्त्वार्थसूत्रम्	८०....१०८
८	बृहत्स्वयंभूस्तोत्रम्	१०९....१४०
९	द्वात्रिंशतिका	१४१....१४८
१०	अकलंकस्तोत्रम्	१४८....१५३
११	मंगलाष्टकम्	१५४ ... १५७
१२	महावीराष्टकम्	१५७....१५९
१३	नमस्कारमंत्राः	१५९....१६०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम नंबर	विषय	पृष्टसंख्या
१४	ईर्यापथशुद्धिः	१६१—१७०
१५	सिद्धभक्तिः	१७१—१७५
१६	श्रुतभक्तिः	१७५—१८०
१७	चारित्रभक्तिः	१८० —१८४
१८	योगिभक्तिः	१८४—१८७
१९	आचार्यभक्तिः	१८७—१९०
२०	पंचगुरूभक्तिः	१९०—१९३
२१	तीर्थंकरभक्तिः	१९३—१९५
२२	शांतिभक्तिः	१९६—२०१
२३	समाधिभक्तिः	२०२—२०६
२४	निर्वाणभक्तिः	२०६—२१४
२५	नंदीश्वरभक्तिः	२१५—२२६
२६	चैत्यभक्तिः	२२७—२३६
२७	कल्याणालोचना	२३६—२४५
९८	चतुर्दिशिवंदना	२४५....२४६
२९	सर्वदोषप्रायश्चित्तविधिः	२४६....२५१
३०	सामायिकपाठः	२५१....२५३
३१	आचार्य शांतिसागरस्तुतिः	२५४....२५८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कौन कौनसी भक्ति कहां कहां करनी चाहिये इसका खुलासा नकशा

कार्य	भक्ति
जिनप्रतिमावंदन	चैत्यभक्ति पंचगुरुभक्ति लघुसिद्धभक्ति लघुआचार्यभक्ति
आचार्यवंदना (गवासनसे)	
सिद्धांतवेत्ता आचारकी वंदना-	सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, आचार्यभक्ति
माधारण मुनियोंकी वंदना-	सिद्धभक्ति
सिद्धांतवेत्ता मुनियोंकी वंदना-	सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति
स्वाध्यायका प्रारम्भ—	लघुश्रुतभक्ति आचार्यभक्ति
स्वाध्यायकी समाप्ति—	लघुश्रुतभक्ति।
आचार्यकी अनुपस्थितिमें पहले दिन उपवास वा प्रत्याख्यान ग्रहण किया हो तो दूसरे दिन आहारके समय	सिद्धभक्ति पढकर उसका त्याग वा आहारके लिय गमन
आहारकी समाप्तिपर अगले दिनके उपवास वा प्रत्याख्यान का ग्रहण करनेमें	सिद्धभक्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्यकी उपस्थितिमें आहारकेलिये जानेके पहले	लघुयोगिभक्ति, लघुसिद्धभक्ति
आहारके अनंतर प्रत्याख्यान वा उपवासकी प्रतिज्ञाकेलिये	लघुयोगिभक्ति लघुसिद्धभक्ति
आचार्य वंदना	लघुआचार्यभक्ति
चतुर्दशीके दिन त्रिकाळ वंदनाके लिये	चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पंचगुरुभक्ति। अथवा सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति।
नंदीश्वर पर्वमें	सिद्धभक्ति, नंदीश्वरभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति।
सिद्धप्रतिमाके सामने	सिद्धभक्ति
तीर्थंकरके जन्म दिन	चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति पंचगुरुभक्ति अथवा सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, श्रुतभक्ति शांतिभक्ति।
अष्टमी चतुर्दशीकी क्रियामें अपूर्व चैत्यवंदना वा त्रिकाळ नित्यवंदनाके समय	चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति शांतिभक्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिषेक वंदना—	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचगुरु भक्ति, शांतिभक्ति ।
स्थिरबिंबप्रतिष्ठा—	सिद्धभक्ति, शांतिभक्ति
जल बिंबप्रतिष्ठाके चतुर्थ अभिषेकमें	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचमहा-गुरुभक्ति, शांतिभक्ति ।
तीर्थंकरोंके गर्भजन्मकल्याणकमें-	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, शांति-भक्ति ।
दीक्षकल्याणक	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, योगि-भक्ति, शांतिभक्ति ।
ज्ञानकल्याणक	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, शांति भक्ति ।
निर्वाणकल्याणक—	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, निर्वाण और शांतिभक्ति ।
वीरनिर्वाण—सूर्योदयके समय-	सिद्धभक्ति, निर्वाण, पंचगुरु, शांतिभक्ति ।
श्रुतपंचमी—	बृहत्सिद्धभक्ति, बृहत्श्रुतभक्ति

यदि चतुर्दशीकी क्रिया चतुर्दशीके दिन न हो सके तो पौर्णिमा वा अमावास्याके दिन अष्टमीकी क्रिया करे अर्थात् सिद्ध, श्रुत, चारित्र और शांतिभक्ति पढे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	श्रुतस्कंधकी स्थापना, बृहत्वाचना बृहत्श्रुतभक्ति, आचार्यभक्ति पूर्वक स्वाध्याय, श्रुतभक्ति द्वारा स्वाध्यायकी पूर्णता अंतमें शांतिभक्ति कर क्रियाकी पूर्णता
श्रुतपंचमीके दिन गृहस्थोंको -	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति ।
सिद्धांत वाचना —	सिद्ध, श्रुतभक्ति द्वारा प्रारंभ श्रुतभक्ति आचार्यभक्ति कर वाचना अंतमें श्रुत और शांति भक्ति ।
गृहस्थोंको सन्यासके प्रारम्भमें -	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति ।
गृहस्थोंको सन्यासके अंतमें -	सिद्ध, श्रुत, शांति ।
वर्षायोगधारण करते समय -	सिद्ध, योगि, चैत्यभक्ति ।
वर्षायोगधारणकी प्रदक्षिणामें -	यावंति जिनचैत्यानि, स्वयंभू-स्तोत्रकी दो स्तुति चैत्यभक्ति ।
वर्षायोग स्वीकार करते समय -	गुरुभक्ति शांतिभक्ति ।
वर्षायोगकी समाप्तिमें —	वर्षायोगधारण करनेकी पूर्ण विधि
आचार्यपद ग्रहण करते समय -	सिद्ध, आचार्य, शांतिभक्ति ।
प्रतिमायोग धारण करनेवाले मुनिकी वंदना करते समय	सिद्ध, योगि, शांतिभक्ति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीक्षा ग्रहण करते समय--	बृहत्सिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति
दीक्षाके अंतमें—	सिद्धभक्ति ।
केशलोंच करते समय—	लघुसिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति
लोचके अंतमें—	सिद्धभक्ति ।
प्रतिक्रमणमें—	सिद्ध, प्रतिक्रमण, वीरभक्ति, चतुर्विंशतितीर्थंकरभक्ति ।
रात्रियोग धारण	योगिभक्ति ।
रात्रियोगका त्याग—	योगिभक्ति ।
देववंदनामें दोष लगनेपर-	समाधिभक्ति ।
सामान्य ऋषिके स्वर्गवास होनेपर उनके शरीर और निषद्याकी क्रियामें	सिद्ध, योगि, शांतिभक्ति ।
सिद्धांतवेत्ता साधुके स्वर्गवास में--	सिद्ध, श्रुत, योगि, शांतिभक्ति ।
उत्तर गुणधारी साधुके स्वर्गवास होनेपर	सिद्ध, चारित्र, योगि, शांतिभक्ति
उत्तरगुणधारी सिद्धांतवेत्ता साधुके स्वर्गवासपर	सिद्ध, श्रुत चारित्रयोगिशांतिभक्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री १०८ आचार्यवर्य शांतिसागर महाराज.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या..... प्राप्ति-संख्या.....

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम रत्न मंजूषा

लेखक शिव कोटि आचार्य

लेनेवाले का	देनेकी	लेनेवालेका	लौटानेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi